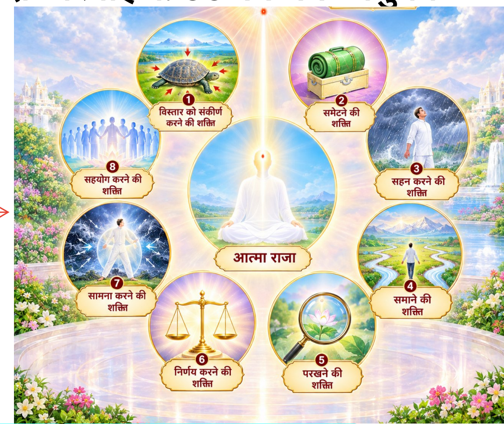

अमृतवेले

विशेष सर्व शक्तियों के अनुभवी स्वरूप बन

योग की सकाश वायुमण्डल में फैलाओ,

मन को सदा (Constant) बिजी रखो,

समय की पुकार है - तीव्र पुरुषार्थी भव

crossing thousands of hurdles at a time through constantly flying stage (उड़ती कला)

Call of time/समय की पुकार

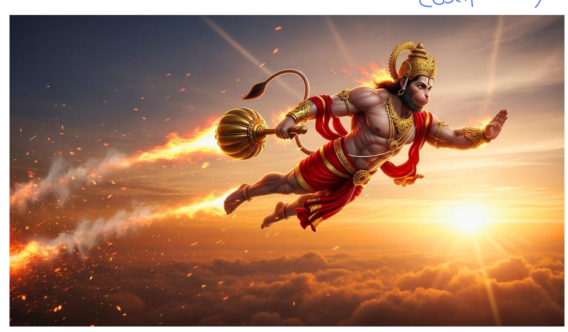

आज बापदादा चारों ओर के बच्चों के मस्तक में भाग्य के चमकते हुए सितारे देख रहे हैं। एक जन्म का, दूसरा सम्बन्ध का और तीसरा प्राप्तियों का। तीनों भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं। जन्म का भाग्य तो आप जानते हो कि आप सबको यह दिव्य जन्म, ब्राह्मण जन्म देने वाला स्वयं भाग्य विधाता है। तो सोचो, कितना बड़ा भाग्य है! साथ-साथ सम्बन्ध, इसकी विशेषता जानते हो कि तीनों सम्बन्ध बाप, शिक्षक, सतगुरू तीनों सम्बन्ध एक बाप से हैं। एक में ही तीन सम्बन्ध हैं। प्राप्तियों को भी जानते हो, जहाँ बाप है वहाँ प्राप्तियां तो सर्व (All) और बेहद (Infinite) की है। एक में

1

मैं कौन, मेरा कौन...!

Entire Universe

"Entire universe belongs to my father, No one has even dare to touch me."

Three in one

2

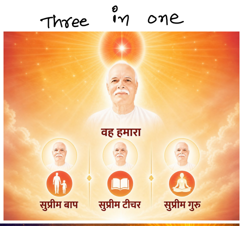

3

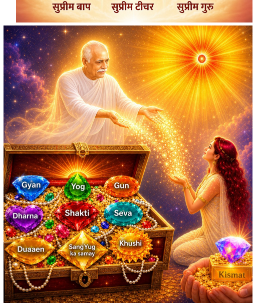

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

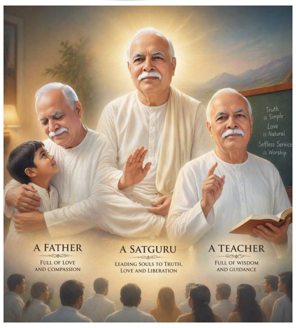

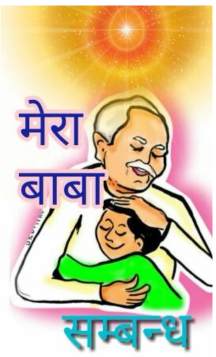

तीनों सम्बन्ध हैं। वैसे भी जीवन में यह तीन सम्बन्ध आवश्यक हैं लेकिन दुनिया वालों के हरेक सम्बन्ध अलग-अलग हैं और आपके तीनों सम्बन्ध एक में हैं। एक में तीनों सम्बन्ध होने के कारण याद भी, अनुभव भी सहज होता है। सब तीनों सम्बन्ध के अनुभवी हैं ना! बाप द्वारा क्या मिलता है? वर्सा। वर्सा भी कितना ऊंचा मिलता है और यह वर्सा कितना समय चलता है क्योंकि परमात्म बाप द्वारा प्राप्त होता है। दूसरा सम्बन्ध है शिक्षक का, शिक्षा को कहा जाता है सोर्स आफ इनकम। तो आप सबको शिक्षक द्वारा कितना ऊंच प्राप्ति हुई है, जानते हो ना! ऐसी ऊंची प्राप्ति सिवाए परमात्मा पिता के और किससे हो नहीं सकती। शिक्षा से पद की प्राप्ति होती है और आप सबको सबसे श्रेष्ठ प्राप्ति है, दुनिया में भी श्रेष्ठ प्राप्ति राज्यपद को कहा जाता है। तो आपको भी शिक्षक द्वारा राज्यपद की प्राप्ति हुई है। अभी भी स्वराज्य के राजा हो, क्यों? आत्मा राजयोगी होने के कारण स्वराज्य अधिकारी बनती है। स्व पर राज्य करती है। कर्मेन्द्रियों के वशीभूत नहीं होती, आत्मा मालिक होके इन कर्मेन्द्रियों की राजा बन जाती है। तो अभी का स्वराज्य और भविष्य में भी राज्य भाग्य प्राप्त होता है। तो डबल राज्य अभी भी और भविष्य में भी पद की प्राप्ति होती है। और तीसरा सम्बन्ध है सतगुरू का। तीनों सम्बन्ध प्राप्त हैं ना! हैं? बाप का,

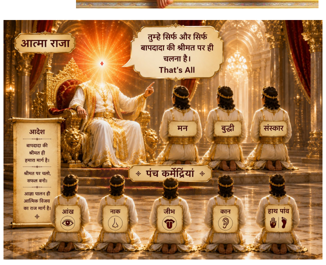

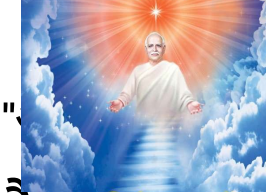

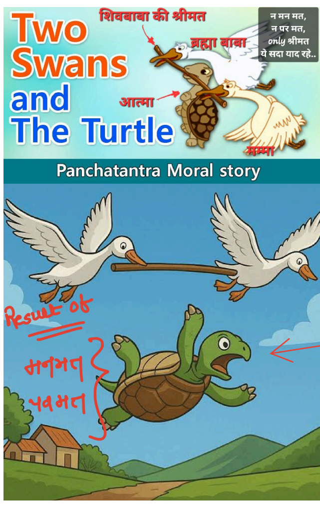

शिक्षक का और तीसरा है सतगुरू का। सतगुरू द्वारा गुरू की श्रीमत मिलती है। कितनी श्रेष्ठ मत मिली है? तो अपने को चेक करो कि सदा श्रीमत पर चलते हैं वा कभी मनमत परमत की तरफ तो बुद्धि नहीं जाती? चेक किया? जो समझते हैं सतगुरू द्वारा सदा ही श्रीमत श्रेष्ठ मत पर चलने वाले हैं, मनमत परमत पर कभी भी स्वप्न में भी नहीं जाते, वह हाथ उठाओ, जो सदा श्रीमत पर ही चलते हैं, परमत मनमत नहीं, हाथ उठाओ।

Both are Extremely dangerous
In other Words
They are fatal
(प्राणघातक)

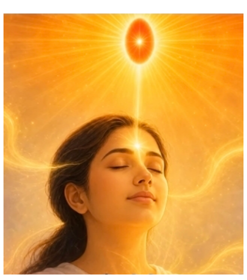

देखो, माताओं ने उठाया! थोड़े थोड़े उठा रहे हैं। कभी कभी चली जाती हैं और परमत मनमत धोखा दे देती है। और विशेष श्रीमत क्या है? अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो। तो सहज है या मुश्किल है? कभी कभी मुश्किल हो जाती है! लेकिन बाप यही चाहते हैं कि सदा इन तीन सम्बन्धों से हर बच्चा आगे आगे उड़ता चले। तो बापदादा पूछते हैं कि जिन्होंने हाथ नहीं उठाया वह अब से मनमत, परमत का त्याग कर सकते हैं? कर सकते हैं? वह हाथ उठाओ। अच्छा! क्योंकि बापदादा ने समय का इशारा दे दिया है। अभी संगम का समय अति वैल्यूएबल है और बापदादा ने यह भी इशारा दे दिया

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

बाप का रूप प्यारा है,
धर्मराज साथी बना तो कुछ नहीं सुनेगा।
AV: 25/11/95

अगर इस कल्प में प्रजा बने तो
कल्प कल्पांतर प्रजा ही बनेंगे

Attention Please..!

इसको साधारण बात नही समझो

Take it Seriously..

Example of अचानक

है कि वर्तमान समय के प्रमाण सब अचानक होना है इसलिए सदा एवररेडी बनना है ना! सभी साथ चलेंगे ना कि पीछे पीछे आयेंगे? बापदादा के साथ अपने घर चलना है ना! रेडी हो ना! साथ चलने के लिए रेडी हो? एवर-रेडी। रेडी भी नहीं, एवररेडी (All the time Ready)। तो बापदादा समय का इशारा दे रहे हैं। इस एक जन्म में 21 जन्मों की प्रालब्ध बनानी है। तो सोचो कितना अटेन्शन देना है। बाप का हर बच्चे के साथ प्यार है, बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा बाप के साथ-साथ चले और साथ-साथ राज्य अधिकारी बनें।

Take it Seriously..

Point to ponder very deeply...

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

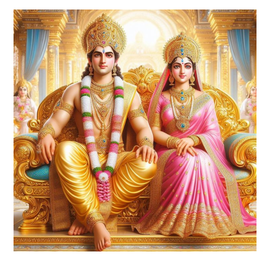

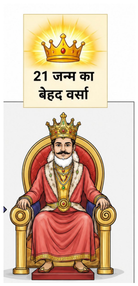

तो आप साथ चलने के लिए बाप समान सम्पूर्ण और सम्पन्न बनेंगे तब तो साथ चलेंगे ना! इस समय इस छोटे से जन्म में 21 जन्म की प्राप्ति निश्चित है। तो सोचो संगम का छोटा सा जन्म एक एक मिनट कितना महान है! हिसाब लगाओ, इस जन्म में 21 जन्म का राज्य भाग्य लेना है तो संगम का एक मिनट भी कितना वैल्यूएबल है। तो इस वैल्यू को जान क्या करना पड़ेगा?

संगम मान लो 100 years, उसमें 90 years बीत गए।
हमारे पास 10 साल है(just मान लो हिसाब की सरलता अर्थ क्योंकि अंतिम घड़ी का कोई भरोसा नहीं। साथ ही विनाश काल शुरू हो जाने के कारण बाहर की परिस्थितियां ऐसी होगी जो सहजता से योग लगाने नहीं देगी।) और प्राप्ति 2500 वर्ष की।
तो एक साल में कम से कम 250 साल की प्रालब्ध जमा करनी है।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

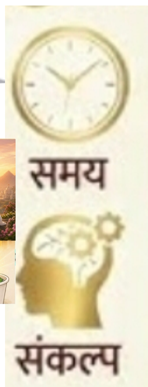

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि दो बातों का विशेष अटेन्शन दो। दो बातें कौन सी? याद हैं ना! एक समय और दूसरा संकल्प। संकल्प व्यर्थ न जाये, समय व्यर्थ न जाये। एक एक सेकण्ड सफल हो। तो बोलो इतना अटेन्शन देना पड़ेगा ना! बापदादा का तो सभी बच्चों से प्यार है। बापदादा यही चाहते हैं कि एक बच्चा भी साथ से रह नहीं जाए। साथ है, साथ चलेंगे, साथ राज्य अधिकारी बन सदा जीवन में सुख शान्ति का अनुभव करेंगे। तो बोलो, साथ चलेंगे ना! चलेंगे? रह तो नहीं जायेंगे? देखो, तीन भाग्य तो हर एक के मस्तक में चमक रहे हैं। अपने मस्तक में यह तीनों ही भाग्य दिखाई देते हैं ना! संगमयुग ही भाग्यवान युग है। जो जितना भाग्य बनाने चाहे उतना बना सकते हैं। लेकिन बहुत समय का अटेन्शन चाहिए। तो सभी बच्चे अपने अपने पुरुषार्थ में अभी तीव्रता लाओ। पुरुषार्थी हैं, बापदादा देखते हैं पुरुषार्थ करते हैं लेकिन सभी का तीव्रता का पुरुषार्थ अभी होना चाहिए। बापदादा हर बच्चे को बालक सो मालिक देखने चाहते हैं। किसका मालिक? सर्व खजानों का मालिक। कभी कभी कोई बच्चे बापदादा को कहते हैं कि बाबा आपने तो सर्वशक्तियां दी हैं और हम भी अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान मानते हैं लेकिन कई बच्चे उल्हना देते हैं कि कभी कभी जिस समय जो शक्ति की आवश्यकता होती है, वह समय

हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Take it Seriously..

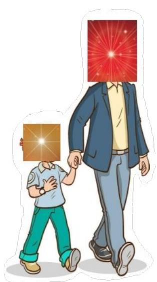

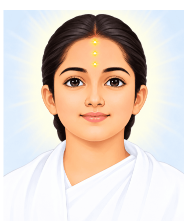

lightening speed (तीव्रता)

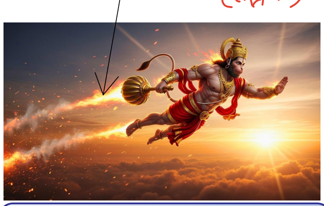

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

मैं मास्टर सर्व शक्तिवान आत्मा हूं

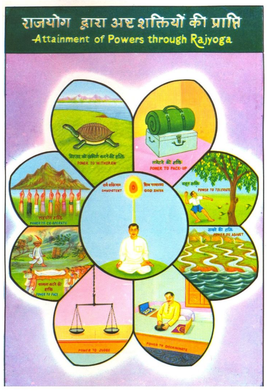

पर नहीं आती है। लेकिन इसका कारण क्या? बाप ने हर एक को सर्व शक्तियां दी हैं। दी हैं कि किसको कम दी हैं किसको ज्यादा? सर्वशक्तियां मिली हैं, हाथ उठाओ। सभी को मिली हैं लेकिन समय पर क्यों नहीं काम पर आती हैं? इसका कारण? कारण को जानते भी हो लेकिन उस समय भूल जाते हो। सर्वशक्तियों का खजाना हर बच्चे को वर्से में मिला है। बाप ने सभी को सर्वशक्तियों का वर्सा दिया है, कोई को कम कोई को ज्यादा नहीं दिया है। सर्वशक्तियां दी हैं लेकिन समय पर क्यों नहीं आती हैं! आप सोचो कोई भी अगर अपने स्वमान की सीट पर नहीं होता तो उसका आर्डर कोई मानता है? तो जिस समय शक्ति नहीं आती हैं, उसका कारण है कि आप अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट नहीं होते इसीलिए बिना सीट के आर्डर कोई नहीं मानता। तो सदा अपनी सीट पर सेट रहो। कभी वेस्ट थॉटस चलते हैं वा कभी टेन्शन आता है तो उससे ही स्वमान की सीट छूट जाती है। बापदादा ने हर एक को कितने स्वमान दिये हैं। कितनी बड़ी स्वमान की लिस्ट है! गिनती करो, कितने स्वमान बाप ने दिये हैं? स्वमान में सेट नहीं होते हैं तो जहाँ स्वमान नहीं वहाँ क्या होता है? जानते हो ना! देह अभिमान आता है। या तो स्वमान है या तो देह-भान है। तो देहभान की सीट पर आर्डर करेंगे तो शक्ति नहीं मानती है। नहीं तो मास्टर

No Partiality At All

Here is the Fault

Simple Math..

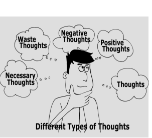

Note it down

समझा?

v/s

देह अभिमान

Simple Math..

सर्वशक्तिवान का शक्ति नहीं मानें यह हो नहीं सकता। सीट पर सेट होना, इसका अभ्यास सदा करो। चेक करो चाहे कर्मयोग में हो, चाहे सेवा में हो, चाहे अपने मनन मंथन में हो लेकिन सीट पर सेट हैं तो सर्वशक्तियां हाज़िर होती हैं।

आज बापदादा ने देखा, अमृतवेले चक्कर लगाया। चारों ओर का चक्कर लगाया, चाहे विदेश चाहे देश। बापदादा को चक्कर लगाने में समय नहीं लगता। तो क्या देखा? बतायें। सभी मैजॉरिटी बैठे तो थे, उठकर अपने अपने स्थानों पर बैठे थे, पुरुषार्थ भी कर रहे थे कि सारा समय सर्व अनुभवीमूर्त हो करके बैठें लेकिन क्या देखा? अनुभवी मूर्त कोई कोई थे, क्योंकि सबसे बड़ी शक्ति अनुभव की है। अनुभवी स्वरूप, सर्वशक्तियों के अनुभवी स्वरूप, मास्टर नॉलेजफुल, मास्टर सर्वशक्ति स्वरूप, तो अनुभवी

Result

स्वरूप बनने में कुछ कमी दिखाई दी। पुरुषार्थ करते हैं, बापदादा ने फिर भी मुबारक दी जो पुरुषार्थ करके मैजारिटी आते हैं, बैठते मैजारिटी हैं लेकिन बापदादा

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

यही चाहते हैं कि लाइट माइट स्वरूप के अनुभवी मूर्त बन बैठें क्योंकि यह अमृतवेले के योग की सकाश सारे वायुमण्डल में फैलती है। इस अनुभव

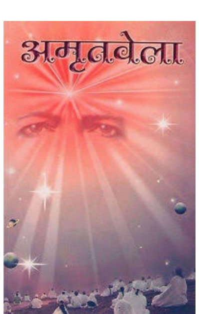

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Example

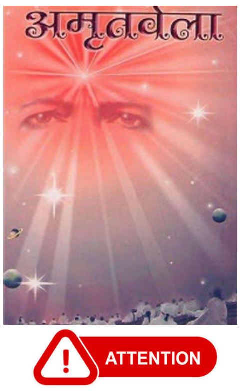

को और आगे बढ़ाओ। जैसे ब्रह्मा बाबा को देखा, कितनी पावरफुल फरिश्ते स्वरूप की स्थिति रही। ऐसे ही इस अमृतवेले को अभी अपने अपने रूप से अटेन्शन और अथक होकर दो। बापदादा ने देखा कई बच्चे लाइट माइट रूप में भी बैठते हैं, ना नहीं है, हाँ भी है लेकिन इस समय के पुरुषार्थ को और भी अटेन्शन देना होगा और बापदादा ने पहले भी इशारा दिया कि अपने मन को सदा बिजी रखो। चाहे मन्सा सेवा से, चाहे वाचा से, चाहे मनन शक्ति में बिजी रखो। मनन करो। मनन शक्ति मन को एकाग्र बना देती है। कोई कोई बच्चे मनन अच्छा करते भी हैं लेकिन मनन शक्ति को भी सारे दिन में बढ़ाओ क्योंकि बापदादा को लास्ट बच्चे से भी प्यार है। लास्ट बच्चे को भी बापदादा यही चाहते कि साथ चले, रह नहीं जाये। पीछे पीछे नहीं रह जाए। तो क्या करेंगे? अटेन्शन।

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

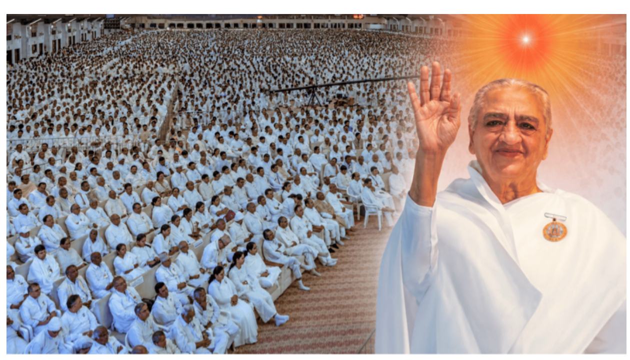

आज बापदादा सभा को देख जानते हैं कि बच्चों की वृद्धि होनी ही है। 75 वर्ष की जुबली मनाई। उसकी तो बापदादा बच्चों को मुबारक दे रहे हैं। बापदादा ने सेवा की लगन भी देखी, हर एक स्थान वालों को उमंग है और सेवा का फल और सेवा का बल वह भी

फल बल

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

दिखाई दे रहा है। विशेष बापदादा ने देखा कि जहाँ भी बच्चों ने सेवा की है वहाँ इस वारी गवर्मेन्ट के निमित्त बनी हुई आत्मायें ज्यादा आई हैं और रिजल्ट में मानते भी हैं कि अभी के समय अनुसार जबकि दु:ख और अशान्ति बढ़ रही है तो यह जो टॉपिक रखी है वह आवश्यक है क्योंकि जितना ही शान्ति चाहते हैं उतनी अशान्ति बढ़ रही है। कोई न कोई बात अशान्ति की आ ही जाती है। इसके लिए चारों ओर टेन्शन बढ़ रहा है और गवर्मेन्ट भी चाहती है कि "भारत टेन्शन फ्री हो जाए"। तो सभी ने, जिन बच्चों ने सेवा की है उन सभी बच्चों को बापदादा मुबारक दे रहे हैं और जो करने वाले हैं उन्हों को भी एडवांस में मुबारक दे रहे हैं।

बापदादा हमसे क्या चाहते है?

बापदादा अभी यही चाहते हैं कि एक एक बच्चा फॉलो फादर करते हुए बाप समान सम्पन्न जरूर बनें। बापदादा ने देखा कि पुरुषार्थ भी सब बच्चे करते हैं। पुरुषार्थ की लगन भी है, अपने से प्रॉमिस भी बहुत करते हैं, अब नहीं करेंगे, अब नहीं करेंगे... लेकिन कारण क्या होता है? कारण है पुरुषार्थ में दृढ़ता कम है। बीच-बीच में अलबेलापन आ जाता है। हो जायेंगे, बन जायेंगे... यह अलबेलापन पुरुषार्थ को

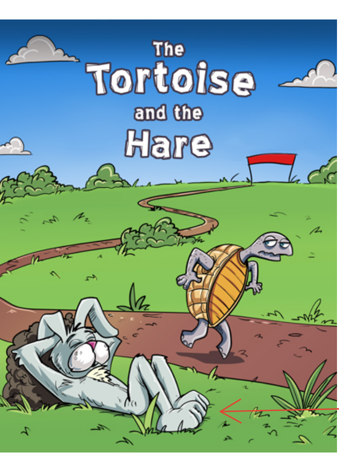

ढीला कर देता है। तो अब क्या करेंगे? अभी यही विशेष अटेन्शन दो, अपने आप अपना प्रोग्राम बनाओ, जिसमें सारा दिन मन को बिजी रखो।

Homework

अपना प्रोग्राम आप बनाओ। **टाइमटेबुल अपना आप बनाओ, मन को बिजी रखने का।** चाहे मनन करो, चाहे सेवा करो, चाहे एक दो को अटेन्शन खिंचवाओ लेकिन बिजी रखो। मन से बिजी, शरीर से बिजी तो होते हो लेकिन मन से बिजी रहो। मन के बिजी रहने में बिजनेसमैन नम्बरवन बनो। यह कर सकते हो? करेंगे? करेंगे? क्योंकि आप जानते हो ब्रह्मा बाप भी आपका इन्तजार कर रहे हैं और आपकी एडवांस पार्टी भी आपका इन्तजार कर रही है, कब समय को समीप लाते हैं क्योंकि समय को समीप लाने के जिम्मेवार आप हो। अपने को सम्पन्न बनाना अर्थात् समय को समीप लाना।

Feel the Responsibility

अर्थात

तो बापदादा विशेष एक मास दे चुका है। इस एक मास में हर एक को तीव्र पुरुषार्थी बन, पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है। मंजूर है? है मंजूर? हाथ उठाओ। अच्छा, मुबारक हो। अभी हर एक को दृढ़ संकल्प कर रोज़ बापदादा को अपनी रिजल्ट सारे

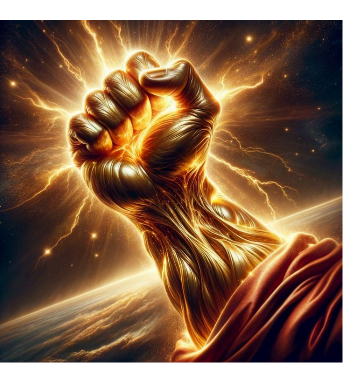

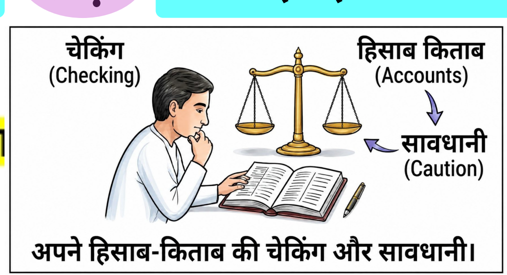

दिन की कैसी देनी है? तीव्र पुरुषार्थ की। पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ। इसके लिए तैयार हैं? हैं तैयार? दो हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। अभी बापदादा अचानक ही बीच में रिजल्ट मंगायेगा। डेट नहीं बताते हैं। अचानक ही एक मास के अन्दर कोई भी डेट पर रिजल्ट मंगायेंगे। *At any cost...* करना ही है। यह प्रॉमिस अपने आप करो। बापदादा करायेगा, वह तो कराते ही हैं लेकिन अपने आप से यह संकल्प करो और प्रैक्टिकल करके दिखाओ। करना ही है। करेंगे, गे-गे नहीं... अभी गे-गे अच्छी नहीं है। समय आगे बढ़ रहा है, अति में जा रहा है, तो **समय का परिवर्तन करने वाले क्या आप पूर्वजों को अपने दु:खी परिवार पर रहम नहीं आता?** रहमदिल बनो। दु:खियों को सुख का रास्ता बताओ, चाहे मन्सा से, चाहे वाचा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से। अपना परिवार है ना! तो परिवार का दु:ख मिटाना है। रहमदिल बनो। अच्छा।

दुखियों पे कुछ रहम करो, मां बाप हमारे...

Feel it...

अभी जहाँ भी जो बैठे हैं उन सबको, चाहे टी.वी. में देख रहे हैं, चाहे यहाँ भिन्न-भिन्न स्थान पर बैठे हैं वह भी टी.वी. में देख रहे हैं, एक एक बच्चे को बापदादा आज **तीव्र पुरुषार्थी का टाइटल** दे रहा है। अभी इसी

टाइटल को सदा याद रखना। कोई पूछे आप कौन हैं? तो यही कहना तीव्र पुरुषार्थी। ठीक है सभी को मंजूर है। मंजूर है? अभी ढीला पुरुषार्थ नहीं चलेगा, समय आगे भाग रहा है इसीलिए अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है, **समय की पुकार है - तीव्र पुरुषार्थी भव।** तो सभी बच्चों को बापदादा की बहुत-बहुत यादप्यार और तीव्र पुरुषार्थ की सौगात दे रहे हैं। अच्छा - ओम् शान्ति।

वरदान:- माया की नॉलेज से इनोसेंट और ज्ञान में सेंट बनने वाले सम्पूर्ण पवित्र भव

जैसे सतयुगी आत्मायें विकारों की बातों की नॉलेज से इनोसेंट होती हैं, वही संस्कार स्पष्ट स्मृति में रहें तो माया की नॉलेज से इनोसेंट बन जायेंगे।

लेकिन भविष्य संस्कार स्मृति में स्पष्ट तभी रहेंगे जब आत्मिक स्वरूप की स्मृति सदाकाल और स्पष्ट होगी।

जैसे देह स्पष्ट दिखाई देती है वैसे अपनी आत्मा का स्वरूप स्पष्ट दिखाई दे अर्थात् अनुभव में आये तब कहेंगे माया से इनोसेंट और ज्ञान में सेंट अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र।

स्लोगन: अन्दर की अशुद्धि ही सम्पूर्ण शुद्ध बनने में विघ्न डालती है।

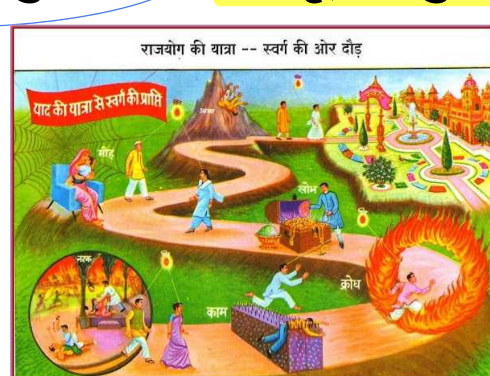

Points: ज्ञान योग ... mp.

20-09-26 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "अव्यक्त-बापदादा" रिवाइज: 30-11-11 मधुबन

ये अव्यक्त इशारे -

Call of time/समय की पुकार

अब अपने दाता स्वरूप को प्रत्यक्ष करो

आप ईश्वरीय सेवाधारी सेवा करने वाले हो न कि सेवा लेने वाले। अगर सेवा लेने वाले बनते हो तो नाम प्रमाण कर्त्तव्य नहीं हुआ।

खुदाई-खिदमतगार सेवा लेते नहीं, देते हैं क्योंकि दाता के बच्चे हैं।

जैसे बाप कुछ लेते नहीं, वह तो सदा देते हैं, ऐसे आप भी देने वाले बनो। अगर कभी प्राब्लम रूप बनते हो तो भी सेवा लेते हो।

very Subtle Point to understand

कोई भी प्रकार की एक्स्ट्रा सेवा लेने वालों को कभी यह नशा (subtle) नहीं रहेगा कि हम दाता, वरदाता के बच्चे हैं।

विशेष सूचना -

मास के तीसरे रविवार का योग अभ्यास

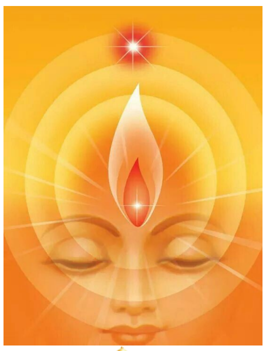

आज मास का तीसरा रविवार है, सभी भाई बहिनें संगठित रूप में एकत्रित होकर सायं 6.30 से 7.30 बजे तक

अपनी ज्ञान स्वरूप स्थिति में स्थित हो,

ज्ञान की लाइट और योग की माइट सर्व आत्माओं को देकर सही राह दिखाने वा उस पर चलने की शक्ति हर आत्मा तक पहुंचे

ऐसे शुभ संकल्पों से विश्व कल्याण की सेवा करें।

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

TELEGRAM

WORLD WIDE WEB

BKdrluhar

Mind maps are Available on WhatsApp and Telegram Only

अव्यक्त बापदादा:

वरदान का फल निकालने के लिए बार-बार वरदान को स्मृति में लाओ। स्मृति स्वरूप के स्थिति में स्थित रहो।

AV: 30/11/2009
Revise: 12/4/26

All वरदान slogans Aug 26 → Click

All अव्यक्त इशारे Aug 26 → Click

All वरदान, slogans and अव्यक्त इशारे At Single place → Click

अव्यक्त बापदादा:

आजकल के जमाने के हिसाब से तो बातें बहुत बदलती जाती हैं। गवर्मेन्ट के कायदे भी बदलने हैं, मनुष्यों की वृत्ति भी बदलनी है। तो हर एक के जीवन में व्यर्थ बातें तो आनी ही हैं, तो व्यर्थ को समाप्त करने के लिए समर्थ संकल्प चाहिए। वेस्ट को खत्म करने के लिए बेस्ट संकल्प चाहिए। तो रोज़ की मुरली में जो वरदान, स्लोगन आता है उसे सुनो। यह वरदान ही श्रेष्ठ संकल्प है। जब व्यर्थ आवे तो श्रेष्ठ संकल्प मन को चाहिए। मन खाली नहीं रह सकता है। मन को कुछ न कुछ संकल्प चाहिए। तो व्यर्थ वेस्ट को बेस्ट करने के लिए आपको यह वरदान और स्लोगन आदि के शब्द मन को चेंज करने के लिए चाहिए।

Remedy

Subtle Psychology

AV: 15/03/2010
Revise: 31/05/2026

अभी बापदादा ने देखा कि बच्चों को माया भी अब तक छोड़ती नहीं है उनका भी प्यार है। और आजकल दो रूपों में विशेष माया भी चांस लेती है। दो रूप में आती है - एक व्यर्थ संकल्प और दूसरा कहीं-कहीं कभी कभी यह भी लहर है जो मैंने किया वा सोचा मैं ही राइट हूँ मैं कम नहीं हूँ। यह लहर फैली हुई है - मैं ही राइट हूँ लेकिन जो कनेक्शन में आते हैं या निमित्त बने हुए हैं वह भी आपके विचार को साथ देते हैं! दूसरों की भी वेरीफिकेशन मिलनी चाहिए।

Attention Please..!

यह व्यर्थ संकल्प टाइम वेस्ट करते हैं। इसलिए बापदादा रोज की मुरली मनन करने के लिए सेवा करने के लिए होमवर्क में रोज देते हैं। अगर मनन करो या मनन करते-करते मगन हो जाओ तो यह रोज का होमवर्क मन को बिजी करने का साधन है।

Example

सुनना और मनन करना या मगन हो जाना यह बापदादा रोज का होमवर्क इसीलिए देता है। जैसे बच्चों को होमवर्क इतना ज्यादा दे देते हैं जो उनकी बुद्धि करने में बिजी रहे। ऐसे रोज की मुरली उसमें चार ही सबजेक्ट का होमवर्क है। मन्सा का भी है वाणी का भी है कर्म का भी अटेन्शन और दिव्यता का इशारा होमवर्क है। तो होमवर्क में बिजी रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प के आने की मार्जिन नहीं रहेगी।

समझा?

इस विधि को अपनाते रहेंगे तो व्यर्थ संकल्प स्वत: ही आपसे विदाई ले जायेंगे
क्योंकि बापदादा ने देखा याद की यात्रा पर सभी का नम्बरवार अटेन्शन है वाचा सेवा में भी अटेन्शन है। लेकिन अभी अपने संस्कार या दूसरों के संस्कार को परिवर्तन करना यह स्वभाव संस्कार जिसको रॉयल रूप में आप कहते हो नेचर मेरी नेचर है भाव नहीं है नेचर है यह धारणा की सबजेक्ट अभी भी रॉयल रूप में आती रहती है। तो बापदादा आजकल यही इशारा देते हैं कि जो भी धारणाओं में कमी होती है उसको अभी विशेष अटेन्शन दो।

AV: 24/10/2010

Revise: 14/06/2026

अमृतवेला और साकार बापदादा के महावाक्य

12.1 अमृतवेले का समय कब है?

(अ) अमृतवेले का समय बहुत-बहुत अच्छा है, इसलिए बाबा कहते सवेरे-सवेरे उठकर एकान्त में बैठ बाबा से मीठी-मीठी बातें करो। याद करो। क्योंकि वह समय बहुत सुन्दर है याद करने का, जिसको प्रभात कहा जाता है। भक्तिमार्ग में भी कहते हैं राम सिमर प्रभात मोरे मन। बाप भी कहते सवेरे उठ बाप को याद करो तो बड़ा मजा आयेगा। अमृतवेले का वायुमण्डल बड़ा शुद्ध होता है। दिन में गोरख धन्धा रहता है। **रात को 12 बजे तक विकारी वायुमण्डल रहता है**। साधु, सन्त, भक्त आदि सब भक्ति भी प्रभात को करते हैं। यूँ तो याद दिन में भी कर सकते हैं, लेकिन अमृतवेले ही बाप को याद करना अच्छा है। प्रभात का समय बहुत अच्छा है। उस समय माया के तूफ़ान नहीं आयेंगे। **रात को 12 बजे तक वायुमण्डल खराब रहता है। तो एक बजे तक छोड़ देना चाहिए। एक बजे के बाद वायुमण्डल अच्छा रहता है।**

Attention..!
Direction of The Almighty

(आ) अमृतवेला सबसे शुभ मुहूर्त माना जाता है। वो लोग कृष्ण का जन्म 12 बजे मनाते हैं, परन्तु वह प्रभात तो हुई नहीं। **प्रभात सवेरे 2-3 बजे को कहा जाता है। अमृतवेला 12 बजे को नहीं कहा जाता।** ऐसे थोड़े ही 12 बजे विकार से उठ कर कोई भगवान का नाम भी लेते होंगे? बिल्कुल नहीं। उस समय तो मनुष्य पतित, गन्दे होते हैं। वायुमण्डल खराब होता है।